ASTRO ARPITA NATH

कुंडली मिलान में नाड़ी दोष : इसके 8 अंक क्यों होते हैं और यह कब रद्द होता है

Arpita Nath द्वारा · योग, दोष एवं मिलान · 2026-09-20

वैदिक ज्योतिष (Jyotish) में, विवाह अनुकूलता (कुंडली मिलान / Kundli Milan) के लिए उपयोग की जाने वाली शास्त्रीय 36-गुण अष्टकूट प्रणाली में नाड़ी कूट (Nadi Koota) सबसे अधिक अंकों वाला घटक है। कुल 8 अंक होने के कारण - जो कुल अंकों का लगभग एक चौथाई है - नाड़ी स्वस्थ संतान के लिए दंपत्ति के गहरे शारीरिक सामंजस्य, आनुवंशिक अनुकूलता (जेनेटिक कम्पैटिबिलिटी), कोशिकीय जीवन शक्ति और ऊर्जावान संतुलन को दर्शाती है।

जब दोनों साथी एक ही नाड़ी वर्ग के अंतर्गत आते हैं, तो इस कूट के लिए अनुकूलता अंक 8 में से 0 हो जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप शास्त्रीय दोष उत्पन्न होता है जिसे नाड़ी दोष (Nadi Dosha) के रूप में जाना जाता है।

1. तीन नाड़ियां और 27 नक्षत्र

ये तीन नाड़ियां आयुर्वेद की त्रि-दोष प्रणाली (वात, पित्त और कफ) को दर्शाती हैं, जो स्थूल और सूक्ष्म शरीर के माध्यम से जैविक और प्राणिक ऊर्जा के प्रवाह का प्रतिनिधित्व करती हैं।

आपकी नाड़ी पूरी तरह से आपके जन्म नक्षत्र (जन्म के समय चंद्रमा का नक्षत्र) से निर्धारित होती है:

आदि नाड़ी (प्रारंभिक / वात ऊर्जा — वायु और आकाश)
• **प्रकृति**: गतिशील, तंत्रिका-प्रधान (नर्वस), तीव्र गति वाली, मानसिक और सहज ज्ञान युक्त।
• **नक्षत्र**: अश्विनी, आर्द्रा, पुनर्वसु, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद।

मध्य नाड़ी (मध्य / पित्त ऊर्जा — अग्नि)
• **प्रकृति**: अग्नि-प्रधान, चयापचय (मेटाबॉलिक), परिवर्तनकारी, निर्णायक और महत्वाकांक्षी।
• **नक्षत्र**: भरणी, मृगशिरा, पुष्य, पूर्वा फाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, उत्तरा भाद्रपद।

अंत्य नाड़ी (अंतिम / कफ ऊर्जा — पृथ्वी और जल)
• **प्रकृति**: स्थिरता देने वाली, स्नेहन (चिकनाई युक्त), सुगठित, स्थिर और भावनात्मक।
• **नक्षत्र**: कृत्तिका, रोहिणी, आश्लेषा, मघा, स्वाति, विशाखा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, रेवती।

२. नाड़ी दोष क्या है और इससे क्यों डरा जाता है?

आयुर्वेदिक और ऊर्जावान (energetic) दृष्टिकोण से, दो समान जैविक ध्रुवों (biological polarities) का मेल उस विशिष्ट तत्व की अत्यधिक वृद्धि कर सकता है:

• **दो आदि नाड़ी** वाले साथी वात को बढ़ाते हैं (तंत्रिका अस्थिरता, संवेदी थकान, अनियमित प्रवाह)।

• **दो मध्य नाड़ी** वाले साथी पित्त को बढ़ाते हैं (अत्यधिक गर्मी, सूजन या दाह, उग्र विवाद, प्रजनन संबंधी समस्याएं)।

• **दो अंत्य नाड़ी** वाले साथी कफ को बढ़ाते हैं (जड़ता, सुस्ती, भावनात्मक भारीपन)।

शास्त्रीय ग्रंथ चेतावनी देते हैं कि अनियंत्रित नाड़ी दोष इस रूप में प्रकट हो सकता है:

• गर्भधारण में कठिनाइयाँ या बच्चों के लिए आनुवंशिक जटिलताएँ

• किसी भी साथी में दीर्घकालिक जीवन-शक्ति या स्वास्थ्य असंतुलन

• ऊर्जावान असंगति जिसके परिणामस्वरूप परस्पर शारीरिक थकावट (burnout) हो सकती है

3. नाड़ी दोष के शास्त्रीय परिहार (नाड़ी दोष भंग)

मुहूर्त चिंतामणि, प्रश्न मार्ग और बृहत् पराशर होरा शास्त्र सहित शास्त्रीय ग्रंथों में यह स्पष्ट किया गया है कि नाड़ी दोष पूर्णतः निरपेक्ष नहीं है। व्यवहार में, विशिष्ट खगोलीय और ग्रहीय स्थितियां इस दोष को पूरी तरह से समाप्त या शांत कर देती हैं:

क. एक ही राशि, भिन्न नक्षत्र
यदि दोनों साझेदारों का चंद्रमा एक ही राशि (एक राशि) में हो, लेकिन उनका चंद्रमा दो पूरी तरह से अलग-अलग नक्षत्रों में स्थित हो, तो नाड़ी दोष समाप्त हो जाता है।
उदाहरण: दोनों की वृषभ राशि है, लेकिन एक का चंद्रमा कृत्तिका (चरण 2, 3 या 4) में और दूसरे का रोहिणी में है।

ख. एक ही नक्षत्र, भिन्न राशियां
यदि दोनों साझेदारों का नक्षत्र एक ही हो, लेकिन वह नक्षत्र दो राशियों में फैला हुआ हो और उनका चंद्रमा अलग-अलग राशियों में पड़ता हो, तो यह दोष समाप्त हो जाता है।
उदाहरण: दोनों का चंद्रमा कृत्तिका में है, लेकिन एक का कृत्तिका मेष राशि में (प्रथम चरण) और दूसरे का कृत्तिका वृषभ राशि में (द्वितीय, तृतीय या चतुर्थ चरण) है।

ग. एक ही नक्षत्र, भिन्न चरण
यदि दोनों साझेदारों का चंद्रमा बिल्कुल एक ही नक्षत्र में हो, लेकिन अलग-अलग चरणों में हो, तो शास्त्रीय ग्रंथ इसके परिहार की अनुमति देते हैं - बशर्ते वह नक्षत्र कोई संवेदनशील या गंडमूल नक्षत्र (जैसे ज्येष्ठा या मूल) न हो।

घ. मजबूत राशि स्वामियों की मित्रता (ग्रह मैत्री)
यदि दोनों साझेदारों की चंद्र राशियों के स्वामी ग्रह आपस में नैसर्गिक मित्र हों (उदाहरण के लिए, गुरु और मंगल या शुक्र और शनि) या एक ही ग्रह हों, तो एक समान नाड़ी का शारीरिक प्रभाव मानसिक और सामाजिक सामंजस्य के कारण काफी हद तक शांत हो जाता है।

ङ. नाड़ी दोष से मुक्त नक्षत्रकई शास्त्रीय विद्वान स्पष्ट रूप से कहते हैं कि निम्नलिखित नक्षत्रों में से किसी एक को साझा करने वाले जोड़ों को नाड़ी दोष का प्रभाव नहीं लगता:
• रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, उत्तरा भाद्रपद और रेवती।

4. नाड़ी दोष के लिए उपचारात्मक उपाय

यदि नाड़ी दोष बिना किसी प्राकृतिक निरस्तीकरण (कैंसिलेशन) के मौजूद है, तो शास्त्रीय परंपरा निम्नलिखित उपचारात्मक उपायों की अनुशंसा करती है:

• **महामृत्युंजय जप:** स्वास्थ्य, जीवन शक्ति और दीर्घायु की रक्षा के लिए महामृत्युंजय मंत्र का दैनिक पाठ या एक समर्पित अनुष्ठान।

• **स्वर्ण / गोदान (गोदान या स्वर्ण दान):** जैविक कार्मिक ऋणों को दूर करने के लिए शुभ दिनों पर एक छोटे सोने के सिक्के का पारंपरिक प्रतीकात्मक दान या पशु कल्याण में सहयोग।

• **गौरी शंकर रुद्राक्ष:** दंपति के सूक्ष्म प्राणिक क्षेत्रों को एकीकृत करने के लिए अभिमंत्रित गौरी शंकर रुद्राक्ष धारण करना।

• **चिकित्सीय / आनुवंशिक जांच (जेनेटिक स्क्रीनिंग):** आधुनिक पद्धति में, नाड़ी दोष वाले जोड़ों को ज्योतिषीय सावधानी को व्यावहारिक स्वास्थ्य के साथ संरेखित करने के लिए आधुनिक रक्त और आनुवंशिक जांच (जैसे आरएच फैक्टर अनुकूलता और कैरियर पैनल) कराने की सलाह दी जाती है।